[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3651

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंग हमारा अलंकरण

प्रो. पार्वती मोदी
सहायक प्राध्यापक, गृहविज्ञान
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नात. कन्या महा., किला भवन, इन्दौर

प्रकृति जिस प्रकार अपने प्रांगण में रंग बिखेर कर उसे मन–मोहक बना देती है, उसी प्रकार हम भी रंगों का संयोजन कर वातावरण को उल्लासपूर्ण बना सकते हैं।रंग का प्रभाव सार्वभौमिक है और हमारी एक महत्वपूर्ण खुषी इस बात में निहित है कि हम रंग का सुंदरतापूर्ण उपयोग किस योग्यता से करते हैं।रंगों का मानव–जीवन से घनिष्ठ संबंध है। प्रत्येक सुंदर वस्तु मनुष्य के ह्रदयों और भावनाओं को प्रभावित करती है। उपयुक्त विभिन्न रंगों से संबंधित चित्र, वस्त्र तथा घर मनुष्य को उत्साहित और आनंदित करते हैं। प्रकृति की सुदंर रंगीन छटा प्रतिक्षण हमारे सन्मुख नया रूप धारण कर प्रस्तुत रहती है, जिससे हम मुग्ध हो जाते हैं। प्रत्येक वस्तु की सुंदरता रंगों के उचित मेल एवं सुंदर ढंग से सजाने पर निर्भर करती है। अपने को सुसज्जित करने, चित्र को आकर्षक बनाने तथा घर को सजाने में विषेष रंगों का चुनाव, उस समय की परिस्थिति, वातावरण, आकार, रूप तथा उसका उपयोग देखकर करना पड़ता है।

रंग का अर्थ – मस्तिष्क द्वारा दृष्टिपटल (Reting) पर विषेष प्रकार की उत्तेजना के आभास को ही रंग कहते हैं। माडर्न सेंचुरीइन साइक्लोपीडिया टवस 6ए चंहम 507 के अनुसार "रंग प्रकाष का ही एक गुण है जिन्हें आँखे देखती हैं और जो विभिन्न आकार भी प्रकाष लहरों से बनते हैं।"रंगों का प्रभाव मानव–भावनाओं तथा संवेगों को प्रभावित करता है, जिस प्रकार सुंदर लय तथा भावयुक्त स्वरबद्ध गान सबको आनंदित करता है। जैसे – बेसुरा गान व्याकुलता उत्पन्न करता है, उसी प्रकार बेंढगें रंगों से सजा कमरा व्यक्ति या चित्र अषांति और व्यग्रता को जागृत करता है। व्यंजनों में रंग मोहकता एवं आकर्षकता प्रदान करता है। परिधानों में रंग उत्कृष्टता लाता है। श्रृंगार में रंग का महत्व अतुलनीय है।आंतरिक सज्जा की दृष्टि से रंग में महत्वपूर्ण होता है – उसका गर्मपन या ठंडापन। ऐसे रंग जिनमें पीला या लाल रंग की मात्रा मिली हुई होती है गर्म रंग कहलाते हैं। वे षीतल रंग हैं जिन रंगों में नीले रंग की मात्रा मिली हुई होती है जैसे नीला + जामुनी, नीला + पीला आदि।

एक नजर– रंग योजनाओं पर – रंग योजनाओं (colour schemes) के दो प्रकार है – (1) अनुरूप (Similar), (2) विपरीत (Contrasting)1– अनुरूप योजनाएं विश्रांतिदायक होती है किंतु कभी–कभी नीरस भी। ये ऐसे रंगों से बनती है, जो रंगचक्र में एक–दूसरे के निकटस्थ रहते हैं जैसे– एक रंगीय योजना (monochromatic) – इनमें एक ही रंग का उपयो होता है किंतु उसकी तीव्रता (intensity) में फर्क हो सकता है, जैसे हरे रंग में हल्का मध्यम व गहरा हरा रंग।

रंग योजनाएँ (ब्सवनत ैबीमउम)एक रंगीय रंग योजना (A mono chromotic) – एक ही रंग का प्रयोग किया जाता है। जैसे लाल, ब्राउन, मंद गुलाबी, स्लेटी नीला या पीला आकर्षक लगते हैं।

समीपवर्ती रंग योजना (Analogous colour scheme) – इसमें रंग चक्र में से एक दूसरे के निकटस्थ रंग लिए जाते हैं। इन सभी में कोई एक रंग समान रूप से होता है। आदर्ष स्थिति में एक–एक प्राथमिक, सहायक और मध्यस्थ रंग लेना चाहिये जैसे पीले (प्राथमिक) के साथ पीला–हरा (मध्यस्थ) तथा हरा (सहायक)। इसके विपरीत यदि हम एक प्राथमिक या सहायक रंग के साथ दो मध्यस्थ रंग लें तो संयोजन उतना अच्छा नहीं होता जैसे हरे (सहायक) के साथ पीला–हरा (मध्यस्थ) और नीला–हरा (मध्यस्थ)

त्रिभुज रंग योजना (A Triad Colour Scheme) – इसमें रंगचक्र को तीन, त्रिभुज के कोण पर स्थित रंगों का प्रयोग किया जाता है। जैसे – पीला, नीला, लाल। हरा, जामुनी, नारंगी।

सम्पूरक रंग योजना (A complementory) – इसमें रंगचक्र में एक दूसरे के विपरीत सिर पर स्थित रंगों का उपयोग किया जाता है। जैसे पीला–जामुनी, हरा–लाल, नीला–नारंगी।

बिखरी हुई सम्पूरक रंग योजना (Split complementary) – इसमें किसी भी रंग के सम्पूरक रंग के आसपास के रंग का उपयोग किया जाता है। जैसे– पीला, नीला–जामुनी, लाल–जामुनी। नीला–हरा, लाल–नारंगी।

दबाव रंग योजना (Dominating colour scheme) –इसमें एक ही रंग का अधिकतम मात्रा में उपयोग किया जाता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

उदासीन रंग योजना (Neutral)– उदासीन रंग का प्रयोग किया जाता है।
आंतरिक सज्जा में रंगों का प्रयोग निम्नानुसार किया जा सकता है –

कमरे का स्वरूप, आकार एवं स्थिति में –यदि कमरे का स्वरूप एवं आकार छोटा है तो उसमें षीतल रंग उपयुक्त रहेंगे। आंतरिक सज्जा में रंगों का गर्मपन और ठंडापन इसलिए महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि इसका संबंध वस्तु से होता है जिसमें गर्मपन एवं ठंडा रहता है। पीला और लाल हमें गर्म दिखाई देता है, क्योंकि यह सूर्यप्रकाष, कृत्रिम प्रकाष और अग्नि का रंग होता है। नीला और हरा ठंडे रंग माने जाते हैं, क्योंकि यह आकाष, पानी, बर्फ एवं पत्तियों से संबंधित होते हैं।

चित्रवृत्ति (Mood) – किसी कमरे की चित्तवृत्ति उसके रंगों के माध्यम से व्यक्त की जा सकती है। महिलाओं के कमरे को कोमल हल्के गुलाबी रंग तथा सफेद रंग से पुरूषों के कमरे को लाल बादामी या नेवी ब्लू से तथा मनोरंजन के कमरे को सफेद आसमानी नीले हल्के पीले रंग से सजाया जा सकता है।

षैली (Style) – साम्राज्यवादी रंग चमकीले व षक्तिषाली, ग्रामीण रंग स्पष्ट व आनंदप्रद, फ्रांसीसी रंग मटमैले तथा आधुनिक रंग मध्यम प्रकार के होते हैं। इस तरह रंगों के प्रयोग सीमितता आती है।

प्रचलित फैषन (Fashion) – फैषन के अनुरूप रंगों का प्रयोग किया जाता है।

व्यक्तिगत पसंद (Personal Preference) – अधिकतर बच्चे हल्के रंग युवा स्पष्ट तथा अन्य सदस्य कोमल रंगों को पसंद करते हैं।

उपलब्ध परिसज्जाएँ (Furnishings on hand) – रंगों के प्रयोग में पूर्व से प्राप्त पर्दे फर्नीचर आदि का ध्यान रखना पड़ता है।

विभिन्न कमरों में रंगों का उपयोग

रसोईघर – चूँकि रसोईघर का ताप ईंधन के उपयोग के कारण घर के अन्य कक्षों से अधिक रहता है, अतः ठंडे रंगों का उपयोग वांछनीय है। इनमें हल्का नीला, हल्का हरा, क्रीम आदि आते हं। चटकीले रंग पर्दों या पुष्पसज्जा आदि के माध्यम से दिये जा सकते हैं।

भोजन कक्ष– साधारणतः भोजनकक्ष भी उसी रंग तथा नमूने को ध्यान में रखकर सजाया जाता है, जिस पर पूरा घर आधारित होता है। इसमें रंग–योजना प्रसन्नतापूर्ण, हल्की एवं चमकीली होनी चाहिए। हल्का गुलाबी, नींबू के समान पीला, मक्खनी पीला, तरबूजे के समान गुलाबी, हल्का हरा कमरे में ताजगी और आनंद के प्रतीक है। सफेद रंग तो सर्वश्रेष्ठ और षांतिदायक रहता ही है।

बैठक कक्ष – अपनी आर्थिक स्थिति के अनुसार तेल रंग, वेट या डिस्टेम्पर भी रंग योजना के आधार पर किया जा सकता है। विदेषों में अथवा ठंडे देषों में हल्के गर्म रंग अत्याधिक प्रयुक्त होते हैं। भारत में सादे ठंडे रंग जैसे सफेद, हल्का नीला, हरा क्रीम रंग और मूंगिया रंग का उपयोग उत्तम है। रंग योजना बनाते समय कमरे के आकार–प्रकार और प्रकाष को ध्यान में रखकर रंगों का चुनाव करना चाहिए। कमरे के दोष छिपाने के लिए उचित रंगों का उपयोग किया जा सकता है। दीवार और छत के रंग में विपरीत रंग या छाया–प्रकाष रंग का प्रयोग भी किया जाता है। जैसे– एक प्रकार की रंग योजना के अनुसार मुख्य दीवार सफेद, विपरीत दीवार धूम्र–नील छत, नील–हरित, दरवाजे, धूम्र नील, पर्दे ला (Red), फर्ष पीत–धूसर (pale gray) आदि रंग की जा सकती है। दीवार पर पुताई के लिए गहरा रंग उपयुक्त नहीं होता है। इससे कमरे में अंधेरा हो जाता है तथा गहरे रंग की पृष्ठभूमि (background) पर सजावट के समान की आभा फीकी हो जाती है।

अतिथि कक्ष – आंगतुक के स्वागतार्थ उनकी सुख–सुविधा के लिए एक निष्चित कमरा होता है, इस कमरे की रंग व्यवस्था अन्य कमरों की व्यवस्था से मेल खाती हो या हल्के रंग की योजना से सुसज्जित हो।

बच्चों के कमरे –(1) छोटे बच्चों के कमरे में साधारणतः गहरे और चटकीले रंग का प्रयोग पसंद किया जाता है। अधिकांष रंग जैसे – लाल, पीला, रूचिकर लगता है। रंग–योजना साधारणतः अन्य कमरों की अपेक्षा अधिक व्यक्तिगत होती है। (2) बड़े बच्चों के कमरे में संभवतः हल्के रंग का प्रयोग करना उत्तम है। हल्के रंग के प्रयोग से कमरे में षांति तथा ठंडक रहती है।

षयनकक्ष में रंग – आकर्षक एवं षांतिदायक रंग व्यवस्था होना आवष्यक है। कक्ष की किसी एक बड़ी वस्तु को आधार मानकर उसके रूप रंग व्यवस्था की जाती है। यह आधार बिंदू फर्ष, दीवार, सुंदर दर्रा–कालीन चित्र या कोई अपना प्रिय रंग हो सकता है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

रंग व्यवस्था के उदाहरण

बड़ा षयनकक्ष

(क) प्रमुख दीवार – चटकदार (Blossom)
- विपरीत दीवार – नीलमय ष्वेत (Wedgwood Blue)
- छत – नीलमय ष्वेत
- काष्ठ उपकरण – अस्थि – ष्वेत (Bone-white)
- पर्दे – मृदु लाल (Pink)
- फर्ष – गहरा नीला (Deep Blue)

(ख) प्रमुख दीवार – गुलाबी
- विपरीत दीवार – हिमनद नीला (GlarierBlue)
- छत – धूम नील (Smoke blue)
- काष्ठ उपकरण – अस्थि – ष्वेत
- पर्दे – धूसर (Grey white)
- फर्ष – मृदु लाल
- अन्य सजावटी सामान – धूसर रंग

छोटा षयनकक्ष

(क) प्रमुख दीवार – झाड़ी हरित (Magnoli)
- विपरीत दीवार – रेणु रंग
- छत – झाड़ी – हरित
- काष्ठ उपकरण – ष्वेत
- पर्दे – स्वर्णिम
- अन्य सजावटी सामान – ष्वेत एवं स्वर्णिम

(ख) प्रमुख दीवार – झाड़ हरित (Magnoli)
- विपरीत दीवार – रेणु रंग
- छत – झाड़ी हरित
- काष्ठ उपकरण – ष्वेत
- पर्दे – स्वर्णिम
- अन्य सजावटी समान – ष्वेत एवं स्वर्णिम

(ख) प्रमुख दीवार – धूसर रंग
- विपरीत दीवार – वेणू रंग (Bamboo colour)
- छत – ष्वेत
- काष्ठ – उपकरण – ष्वेत
- पर्दे – नील – हरित (Blue Greeen)
- फर्ष – नील – हरित
- अन्य सजावटी सामान – मषरूम (Mashroom)

संदर्भ ग्रंथ –

गृह प्रबंध – प्रो. लेखिका कांति पाण्डेय, पुनरीक्षिका प्रा. प्रमिला वर्मा
गृहसज्जा का परिचय – डॉ. मंजू पाटनी
गृह प्रबंध एवं गृह सज्जा – डॉ. करूणा षर्मा, डॉ. मंजू पाटनी, डॉ. सन्ध्या वर्मा
पारिवारिक संसाधन प्रबंध –
आवास एवं गृह सज्जा – द्वितीय संस्करण – डॉ. करूणा षर्मा
Berlin, B and Kay. P. Basic Color Terms : Their University and Evolution, Berkelay University of California Press 1969